Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

समाज, संस्कृति बनाम भाषा

डॉ. रेखा मिश्रा

श्री खंडेलवाल वैश्य पीजी महिला महाविद्यालय जयपुर

Abstract:
भाषा का संबंध समाज और संस्कृति से होता है। भाषा के स्वरूप को समझने के लिए उसे समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ में जाकर के देखना होगा कि भाषा किस तरह से गढ़ी जा रही है क्योंकि भाषा समय के साथ-साथ निरंतर परिवर्तित होती रहती है। भाषा उसकी संरचना, उसका वाक्य विन्यास,अभिव्यक्ति, सब समाज के द्वारा गढ़ी जाती हैं। किसी भी भाषा के जीवन काल में आए हुए परिवर्तनों को देखने के लिए हमें साहित्य की तरफ जाना पड़ता है और हम भाषा के पूरे जीवन क्रम को वहां जान पाते हैं।

भारत विविध भाषाओं का देश है। भारतीय संविधान में हमारी राजभाषा हिंदी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। भाषा विचार विनिमय का साधन ही नहीं है बल्कि भाषा हमें सोचना भी सिखाती है। बुद्धि, कला, साहित्य, राजनीतिक-आर्थिक- सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार भाषा के माध्यम से ही बने हुए हैं और भाषा के माध्यम से ही इनको जाना जा सकता है। भाषा संस्कृति की देन है और संस्कृति की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है किसी भी समाज की संस्कृति का निर्माण आपसी बातचीत, जो भाषा के माध्यम से होती है, उसके आधार पर ही होता है।. एन. के. देवराज ने संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'मानवता के आध्यात्मिक जीवन की सर्जना अथवा इसमें भाग लेने को संस्कृति कह सकते हैं। यदि हम इसे एक उपलब्धि समझे तो यह मानव की निरन्तर विकसित होने वाली ऐतिहासिक वस्तु है। संस्कृति का विकास मानव के आध्यात्मिक ज्ञान एवं भावों के प्रगतिशील संशोधन के क्रमिक विकास में सन्निहित है।'

संस्कृति के अन्तर्गत मनुष्य की सामाजिक प्रथाएँ, परम्पराएँ, धार्मिक मान्यताएँ, रहन-सहन की प्रणाली, आचार-विचार तथा आर्थिक और राजनैतिक विचारों की व्यवस्थाओं का समावेश होता है। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार 'मनुष्य ने धर्म का जो विकास किया, दर्शन शास्त्र के रूप में जो चिन्तन किया, साहित्य-संगीत और कला का जो सृजन किया. सामूहिक जीवन को हितकर और सुखी बनाने के लिए जिन प्रथाओं को विकसित किया उन सबका समावेश हम संस्कृति में करते है।*डॉ संपूर्णानन्द ने संस्कृति की अवधारणा स्पष्ट करते हुए लिखा है "संस्कृति इस दृष्टिकोण को कहते हैं जिससे कोई समुदाय विशेष जीवन की समस्याओं पर दृष्टि निक्षेप करता है। यह दृष्टिकोण कई बातों पर निर्भर करता है। संक्षेप में कह सकते हैं समुदाय की वर्तमान और पुरातन अनुभूतियों के संस्कारों के अनुरूप उसका दृष्टिकोण होता है।" भारतीय संस्कृति में आत्मा का अस्तित्व, पुनर्जन्म में विश्वास, कर्मवाद, पाप-पुण्य जैसी अवधारणाएँ विद्यमान हैं। डॉ. अम्बा प्रसाद 'सुमन' के शब्दों में अनेक संस्कृतियों का सम्मेलन होने पर भी भारतीय संस्कृति की कुछ प्रमुख बातें (विचार, व्यवहार तथा आस्थाएँ) सर्वत्र समान हैं वे हैं ईश्वरवादिता. आत्मा के अस्तित्व में विश्वास कर्म फल भोग तथा जन्मान्त वाद। यही विचारधारा भारतीय संस्कृति का प्राणतत्व है। इसे अनेकत्व में एकता कह सकते हैं।

भाषा के बिना किसी भी समाज का निर्माण हो ही नहीं सकता क्योंकि भाषा ही समाज का निर्माण करती है और भाषा का निर्माण भी समाज से ही होता है और उसी भाषा के माध्यम से संस्कृति समाज विशेष में जन्म लेती है। भाषा को हम अपनी मातृभाषा के रूप में सहजता के साथ सीख लेते हैं। एक छोटा सा बालक जन्म के साथ ही धीरे-धीरे अपनी मातृभाषा में आसपास के परिवेश से अपनी भाषा का निर्माण करता चला जाता है और सहजता से ही उसी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति करने लगता है। ऐसे भी एक जैसी भाषा बोलने वाले व्यक्तियों में आपस में आत्मीय संबंध जुड़ ही

जाता है। मातृभाषा के महत्व पर गांधी जी ने कहा है कि मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना की बच्चे के शारीरिक विकास के लिए मां का दूध। बालक अपना पहला पाठ अपनी माता से ही पढ़ता है इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा पढ़ना उसके स्वाभाविक विकास के खिलाफ समझता हूं। इस प्रकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी मातृभाषा के महत्व को समझते थे और वह जानते थे कि किसी के स्वाभाविक विकास के लिए उसके स्वयं की भाषा का होना आवश्यक है। विदेशी भाषा से किसी भी बच्चे का स्वाभाविक विकास हो नहीं सकता क्योंकि वह उसके विचारों से भिन्न होती है उसे वह अनुवादित रूप में ही प्रयोग में ला सकता है। भाषा का अर्थ समाज निर्धारित करते हैं क्योंकि सामाजिक सरोकार किसी भी भाषा का निर्माण करने के लिए आवश्यक तत्व है क्योंकि समाज में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग होगा उसी प्रकार से वहां की संस्कृति का निर्माण होगा वहां की प्रशासनिक और तकनीकी भाषा संदर्भ में किस भाषा का प्रयोग होगा समाज में भाषा का प्रयोग विभिन्न सांस्कृतिक, प्रशासनिक, तकनीकी तथा पारिस्थितिकी आदि संदर्भ में होता है जो ध्वनि शब्द रूप वाक्य अर्थ की दृष्टि से भाषा को विविध रूप प्रदान करते हैं भूमंडलीकरण के दौर में मीडिया अपने सशक्त साधन के रूप में उभर कर आया है जिससे समस्त विश्व सिमट कर विश्व ग्राम के रूप में एक हो गया है। आज उच्च तकनीकी प्रौद्योगिकी जिसके फलस्वरूप विश्व ग्राम को एक बाजार के रूप में भी विकसित कर दिया गया है और इसी कारण आर्थिक परिपेक्ष में भाषा भी बदलते जा रही है इन संचार माध्यमों का प्रभाव मानव के मन पर भावात्मक रूप से और क्रियात्मक रूप से दोनों तरह से होता है इसलिए मीडिया के भावात्मक प्रभाव के कारण व्यक्ति के मन में जो विभिन्न प्रकार के मनोभाव जन्म लेते हैं उन मनोभावों से भाषा का स्वरूप जिस रूप में सामने आता जा रहा है कि लगता है भाषा सामाजिक व्यवहारों का साधन है किंतु समाज के संदर्भ हमेशा एक जैसे नहीं रहते हैं मानसिक पारंपरिक तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से समाज में भी परिवर्तन होते रहते हैं उपभोक्तावादी संस्कृति सभी को अपने मोहजाल में बढ़ रही है व्यक्तियों की आकांक्षाएं और इच्छाएं बढ़ती जा रही हैं और एक अलग तरह का अंतर्द्वन्द्व जन्म ले रहा है। संचार माध्यमों की वजह से भारतीय संस्कृति पर उनके प्रभाव के कारण पाश्चात्य संस्कृति का रचनात्मक और नकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है और इस प्रभाव का असर भारतीय भाषाओं पर भी पड़ा है जिसमें हिंदी भाषा भी इस प्रभाव से अछूती नहीं रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.सुधीश पचौरी - भूमंडलीकरण, बाजार और हिंदी
2.कुमुद शर्मा - भूमंडलीकरण और मीडिया
3. रामदास मिश्र - हिंदी उपन्यास: एक अन्तर्यात्रा
4.रोहिणी अग्रवाल -इतिवृत्त की संरचना और स्वरूप